1

– अणुव्रत प्राध्यापक मुनिश्री सुखलालजी

मुनिश्रीः दुलहराजः आगमज्ञः सुसंयतः।
आचार्याणां सुसेवायां जीवनं सफलीकृतं। 1।

वाक्पटुः व्यवहारज्ञः विनोदप्रिय भाषणः।
सम्पादन कला दक्षः भाग्यशाली सुलेखकः। 2।

सहिष्णु स्थितात्मायं भिक्षुशासन सेवकः।
महाप्रज्ञस्य विश्वासः चातुर्येण समर्जितः। 3।

2

– मुनिश्री गौतम

मैनें जब दीक्षा ली थी तब आगममनीषी मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी वहां नहीं थे। फिर भी परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने मुझे उनके संरक्षण में ही रखा। इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। आचार्यश्री महाश्रमणजी ने सरदारशहर में उन्हें बहुश्रुत परिषद् में मनोनीत किया।

मुनिश्री की स्वाध्यायशीलता मेरे लिए आदर्श है। कई बार जब मुनिश्री को रात में नींद नहीं आती तो वे मुनि जितेन्द्रकुमारजी से आगम सुना करते थे। उनकी विनोदप्रियता जीवन में सरसता की प्रेरणा देती है। वे जितने विनोदप्रिय थे उतने ही गम्भीर थे। इसीलिए संघ में उनका गरिमामय स्थान था।

शासनश्री मुनिश्री राजेन्द्रकुमारजी और मुनिश्री जितेन्द्रकुमारजी ने सेवा का जो अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया वह किसी से छिपा नहीं है। इन दोनों मुनियों ने मुनि दुलहराजजी की न केवल शारीरिक और मानसिक सेवा की, अपितु उनके हर कार्य में अभिन्न बने रहे। मुझे भी उनकी सेवा में रहने का मौका मिला।

दीप स्तम्भ को प्रणाम

3

– मुनि भूपेन्द्रकुमार

क्षमता, ममता व समता के प्रतीक पुरुष व पुरुषार्थ के सशस्त्र हस्ताक्षर थे। योग व जप के महान अनुष्ठान साधक आगम मनीषी मेरे अनन्य जीवन निर्मापक निष्काम साधक, पुरुषार्थ के महान पुरोधा मुनि श्री दुलहराजजी स्वामी एक तरह से मेरे लिए शरणस्थली के रूप में प्रतिष्ठित थे। जब भी जीवन में संघर्ष का समय आया उस समय वो मेरे सामने लोहे की लाट बनकर खड़े हुए मेरे को नजर आते थे। प्रकाश व प्रेरणा के महान पुरुष थे। हमेशा मेरे भीतर पुरुषार्थ – निडरता व संघर्षशीलता के संस्कारों का बीजारोपण करते रहते थे। आज जो मैं एक तरह से चट्टान की तरह अटल व अचल खड़ा हूँ यह उस महान पुण्य आत्मा का ही चमत्कार है। वह चमत्कारी पुरुष सदेह भले ही मेरे सामने उपस्थित नही है पर विदेह के रूप मे आज भी मेरी आंखों के सामने प्रत्यक्ष एवं स्पष्ट रूप से नजर आ रहे हैं। मरते दम तक आते रहेंगे। मार्ग के दीपक के रूप में मेरा मार्गदर्शन करते रहेंगे। ऐसे महान् दीप स्तंभ को श्रद्धा–भक्ति–समर्पण के साथ शत–शत नमन–नमन–नमन!

श्रद्धाप्रणत मुनि भूपेन्द्र हमेशा हमेशा के लिए रहेंगे तन से मन से वचन से सदा–सदा प्रणत– प्रणत– प्रणत !

4

– मुनि विनीत

''आज अगर ये मुनि नहीं होते तो मेरा साहित्य इस रूप में सम्पादित हो कर जनता के सामने विस्तृत रूप से नहीं आता।'' ये वाक्य थे आचार्य श्री महाप्रज्ञ के उन मुनि श्री के लिए, जिन्होंने अपना जीवन महाप्रज्ञ के चरणों में समर्पित कर दिया था।

मुनिश्री एक तरह से पवित्र प्रज्ञा के धनी थे, वे सहज ही हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड़, संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं में साहित्य का अनुवाद कर लेते थे।

मुनिश्री तेरापंथ धर्मसंघ में सम्भवतया प्रथम मुनि थे, जिन्हें अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान था। आप आचार्यश्री के सान्निध्य में रहकर विदेशों से समागत विद्वानों और आचार्यश्री के बीच दुभाषिये का कार्य भी बहुत अच्छी तरह से सम्पादित करते थे।

मुनिश्री ने कई आगमों का सम्पादन एवं अनुवाद किया और गुजराती उपन्यासों का हिन्दी रूपान्तरण करके साहित्य रसिकों का मधुर रसानुवाद करवाया।

62 वर्ष के संयम पर्याय मे मुनिश्री ने अपनी प्रज्ञा को निर्मल बनाकर आगे के लिए प्रस्थान कर दिया। मुनि श्री के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित।

5

– साध्वी अणिमाश्रीजी

जीवन की पाठशाला में मुस्कान का रंग घोलने वाले व्यक्तित्व का नाम है – मुनि दुलहराजजी। विपरीत हालत में भी धैर्य का दामन नहीं छोड़ने वाले व्यक्तित्व का नाम है– मुनि दुलहराजजी। अनगिनत विशेषताओं के संधारक मुनिश्री का देहावसान संघ में रिक्तता पैदा कर रहा है। अब अपेक्षा है कि उनकी रिक्तता को भरने का सार्थक प्रयास हो।

6

– डॉ. समणी मंगलप्रज्ञा

यथानाम तथा गुणसम्पन्न मुनि दुलहराज वस्तुतः धर्मसंघ के एक दुर्लभ संत थे। उनकी वाक्पटुता सीखने जैसी थी। गम्भीर बात को भी बहुत सहजता से कह देने में सिद्धहस्त थे। उनकी विनोद–प्रियता उनके जीवन में सक्रियता का रस घोलती रही। आगम–मनीषी के रूप में ख्यातनामा उस संत ने अपनी जिन्दगी के प्रत्येक पल को आगममय बनाए रखा। आज भी उनका कर्तृत्व सर्वत्र परिलक्षित हो रहा है।

7

– डॉ. साध्वी सुधाप्रज्ञाजी

मुनि दुलहराजजी साहित्य – सलिला में निरन्तर डुबकी लगाने वाले थे, उन्होंने अपने सम्पादकीय कौशल से आचार्य महाप्रज्ञ की अनेकानेक कृतियों को जन योग्य बनाने का जो प्रयास किया, सदियां उन्हें याद करती रहेगी।

8

परम लक्ष्य प्राप्त करें

– मुनि मुकुल

आगममनीषी मुनिश्री दुलहराजजी तेरापंथ धर्मसंघ के बहुश्रुत संत थे। उनकी अध्यात्मनिष्ठा, संघनिष्ठा, श्रमनिष्ठा एवं श्रुतनिष्ठा श्लाघनीय थी।

मुनि प्रवर कुशल शिल्पकार थे। उन्होंने अनगिन अनगढ पत्थरों को तराशा सजाया, संवारा और भव्य प्रतिमा का आकार दिया।

मुनिश्री द्वारा प्रदत्त सामयिक व बहुमूल्य शिक्षाएं आज भी हमारे मानस पटल पर रेखांकित है। मैं उस दिव्यात्मा के प्रति अपनी भावांजलि समर्पित करते हुए मंगल कामना करता हूँ कि वे ऊर्ध्वारोहण करते हुए अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करें।

9

"दुर्लभः राजः इति दुलहराजः"

– मुनि मलयज कुमार

आगममनीषी मुनि श्री दुलहराजजी स्वामी अपनी नैसर्गिक प्रतिभा के द्वारा व्यक्ति के जीवन में सहिष्णुता, संवेदनशीलता, विनम्रता, मृदुभाषिता आदि गुणों का बीज–वपन करने में निपुण थे।

सफल व्यक्ति की एक पहचान यह होती है कि वह अपने समकक्ष एक और व्यक्ति का निर्माण कर देता है एवं अन्यान्य व्यक्तियों में स्वयं के श्रेष्ठ गुणों को सम्प्रेषित कर देता है। मुलि श्री ने न केवल कुशल व्यक्तियों का निर्माण किया अपितु अपनी दुर्लभ विशेषताओं द्वारा गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं आचार्य श्री महाश्रमणजी के मानसपटल पर एक विशिष्ट छाप छोड़ी है।

ऐसी विरल विशेषताओं से परिपूर्ण उस निर्मल आत्मा के आध्यात्मिक उत्थान के प्रति मंगलकामना।

10

तेरापंथ धर्मसंघ की अपूरणीय क्षति

– मुनि गिरीष

आगम मनीषी मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी के स्वर्गवास से तेरापंथ धर्मसंघ का एक साहित्यकार, एक उपन्यासकार और कविह्रदय की कमी हो गयी। यह स्वीकार करने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि आचार्य महाप्रज्ञजी को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने में मुनि दुलहराजजी स्वामी का प्रमुख हाथ था।

आगम मनीषी मुनि श्री दुलहराजजी स्वामी का अनेकों भाषाओं पर पूरा अधिकार था। जिसमें विशेष रूप से उन्होंने गुजराती भाषा पर तो मानों ऐसा लगता थाा कि मुनि श्री गुजराती हैं। उन्होंने अनेकों गुजराती उपन्यासों का हिन्दी में रूपान्तरण भी किया।

आगम मनीषी दुलहराजजी स्वामी ने अपने रहते हुए ही मुनिश्री धनंजय कुमारजी स्वामी, मुनिश्री जितेन्द्रकुमारजी को भी तैयार कर दिया था। जिससे साहित्य जगत में उनकी पहचान आगे भी बनी रहेगी।

11

– मुनि जयन्तकुमार

मुनि श्री दुलहराजजी स्वामी का व्यक्तित्व एवं कर्तृतव विलक्षण था। उन्होंने न केवल अपना विकास किया बल्कि धर्मसंघ को नई ऊँचाईयां देने में शत–प्रतिशत पुरुषार्थ की आहुतियां दी। मैनें उनको बहुत ही करीब से देखा, उनके वात्सल्य से अभिस्नात भी हुआ। प्रारंभिक वर्षों में जब भी विशेष अवसरों पर बोलने का मानस होता तो उनके द्वारा ही बनाए गए कविता, वक्तव्यों को प्रयोग में लेता। उन्होंने इसके लिए कभी भी मुझे मना नहीं किया। मुनिश्री आगम साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया थी। उसके साथ अनेक मुनियों का निर्माण कर धर्मसंघ की महान सेवा भी की है। ऐसे मुनि का जाना सबको अखरता है। पर नियति को कोई टाल नहीं सकता। मैं मुनिवर के प्रति भावांजलि अर्पित करता हूँ एवं उनकी आत्मा के उत्तरोत्तर आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना करता हूँ।

12 हमने महान संत खो दिया

– समण सिद्धप्रज्ञ

आदमी आता है और चला जाता है। आना कोई बड़ी बात नहीं और जाना कोई छोटी बात नहीं। बड़ी बात होती है कुछ करके जाना।

मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी कुछ करके ही नहीं बहुत कुछ करके गए। अनेक विशेषताओं से सम्पन्न जिन्होंने तीन–तीन आचार्यों की असीम कृपा प्राप्त की। वे दृष्टि सम्पन्न महापुरुष थे। ऐसे महान विद्वान, प्रकाण्ड विद्वान संत का देवलोक होना एक अभाव की अनुभूति कराता है। वे अनेकों लोगों के प्रेरणा– स्त्रोत बने थे। मुनिश्री राजेन्द्रकुमारजी एवं मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने मुनिश्री की जो जी जान से अपना शरीर समझकर सेवा की वह दुर्लभ एवं अनुकरणीय है।

13

– मुनि रष्मिकुमार

सूत्र–मनीषी दुलह ने, मुनि नथमल के पास।
सेवा, विनय, विवेक से, अतिशय किया विकास।।

दुलहसंत ने संघ में, पाया अति सम्मान।
प्रखर योग्यता को दिया, गुरुवर ने अधिमान।।

अपना कर पुरुषार्थ तुम, बढो सिखाया पाठ।
लाइन खींचो दूसरी, करो न किसी की काट।।

आगमवर साहित्य की, सेवा में संलग्न।
रहे सदा निःस्वार्थ बन, अपनेपन में मग्न।।

गुरुवर महाप्रज्ञ के, बने रहे हनुमान्।
वन्दन लो मुनि रश्मि के, (दो) योग्य बनूं वरदान।।

मुनि श्री दुलहराजजी : महान् श्रुतोपासक मनीषी संत

– आगम मनीषी, प्रेक्षा प्राध्यापक प्रोफेसर मुनि महेन्द्रकुमारजी

दीक्षा लेते ही मुझे ऐसे मनीषी संत के पास मुनि जीवन के प्रारम्भिक ज्ञान की शिक्षा प्राप्त हुई, यह मेरा परम सौभाग्य था। आचार्य श्री तुलसी द्वारा 17 अक्टूबर 1957 को दीक्षित होकर आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के सहाय्य में मैं रहा तथा 25 मई सन् 1958 तक (लगभग सात–आठ महीनें) मैं मुनि श्री दुलहराजजी के पास ही रहा। उस दौरान उन्होंने ही मुझे संस्कृत भाषा का प्रारम्भिक अध्ययन करवाया था। इस रूप में मेरे मुनि जीवन के पहले शिक्षा गुरु वे थे। आज यत्किञ्चित श्रुताराधना में अपने आपको लगाने का प्रयास कर रहा हूँ, उसका बीजवपन उन्हीं के द्वारा हुआ था। ऐसे मेरे आद्य शिक्षागुरु के श्रीचरणों में श्रद्धा–सुमन अर्पित करता हूँ।

आगममनीषी मुनिश्री दुलहराजजी उस महान् श्रुतोपासक मनीषी सन्त का नाम है जिन्होंने अपनी विशिष्ट श्रुताराधना से न केवल स्वयं को लाभान्वित किया, अपितु आगम–सम्पादन, आगम–अनुवाद, आगम–अनुसन्धान आदि में अपना अतिविशिष्ट योगदान देकर जिनप्रवचनमहिमामण्डन के महान् कार्य में भी श्रेयः अर्जन किया। आगम – वाङ्मय

के साथ ही तत्सम्बन्ध व्याख्या–साहित्य – निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका आदि – के सागर का गहन अवगाहन कर उन्होंने जो अनुवाद, सम्पादन आदि अति दुरुह कार्य किया और करवाया – यह शताब्दियों में हुए आगम–मनीषियों की पंक्ति में सुशोभित करने वाला सिद्ध हो रहा है। वाचना– प्रमुख गणाधिपति श्री तुलसी एवं प्रधान सम्पादक – विवेचक आचार्य महाप्रज्ञ (मुनिश्री नथमल, युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ) द्वारा उपहृत अमूल्य आगम–साहित्य–निधि के निर्माण में सर्वाधिक सहयोग मुनिश्री दुलहराजजी का था। आगम–प्रकाशन शृंखला में प्रारम्भ में जो दशवैकालिक एवं उत्तराध्ययन के संस्करण आए, इनके प्रत्येक पृष्ठ पर मुनिश्री का अथक परिश्रम, बाहुश्रुत्य एवं विलक्षण मेधा के दर्शन होते हैं। इसी प्रकार इन्हीं आगमों के ''समीक्षात्मक अध्ययन'' के संस्करणों में भी मुनिश्री की आधुनिक सम्पादन–शैली की पारंगतता मुखर हो रही है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी (मुनिश्री नथमलजी) के आगम–कार्य के अतिरिक्त ''जैन–दर्शन के मौलिक तत्त्व'' आदि ग्रंथों तथा योग–ध्यान–विषयक ''मन के जीते जीत'' आदि ग्रंथों के सम्पादन में भी हमें मुनिश्री दुलहराजजी का विलक्षण कौशल स्पष्ट दिखाई देता है। इसी प्रकार गुजराती उपन्यासों के सरस हिन्दी अनुवाद वाले अनेक विपुलाकार ग्रंथों के सर्जन में भी मुनिश्री का श्रम एवं पाण्डित्य मुखरित होता दिखाई देता है।

जीवन के अन्तिम क्षण तक वे श्रुतोपासना में डूबे रहे। उनके द्वारा अनूदित ''उपासकदशांग'' का प्रकाशन जो उनके स्वर्गवास से केवल दो–तीन मास पूर्व ही हुआ था, इस बात का साक्ष्य है कि भयंकर व्याधियों के द्वारा ग्रस्त होने पर तथा वृद्धावस्था द्वारा शरीर जकड़ लिए जाने पर भी वे हारे नहीं – अपने सहयोगी सन्तों को कार्य करवाते रहे और श्रुत–सरिता के प्रवाह को अस्खलित बहाते रहे।

ऐसे महान् बहुश्रुत, महापरिश्रमी बहुभाषाविद् (संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, कन्नड़, गुजराती आदि), सुष्ठुलिपिकार, आगम–वाङ्मय के महान् सेवक – आगममनीषी मुनिश्री दुलहराजजी के महान् साहित्यिक अवदानों को श्रद्धा–सहित नमन!

– मुनि अभिजित्कुमार

अनेक विधाओं में निष्णात मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी तेरापंथ धर्मसंघ के दुर्लभ रत्न थे। ऐसे बहुश्रुत मुनिवर से संस्कृत साहित्य के अध्ययन का दुर्लभ अवसर सन् 2005 में पूज्य प्रवर के दिल्ली चातुर्मास के दौरान सौभाग्य से मुझे उपलब्ध हुआ।

जीवन व्यवहार में उपयोगी सूत्र का निदर्शन भी मुझे यदा कदा उनसे मिलता रहा। वे आगममनीषी, साहित्यकार एवं कोशकार ही नहीं अपितु व्यवहारज्ञ, प्रसन्नमना और विनोदप्रिय भी थे। उनकी बहुश्रुतता सर्वांगीणता और अवसरज्ञता हम में भी सम्प्रेषित हो इसी आशा के साथ आगममनीषी मुनिवर के प्रति श्रद्धासिक्त अभिवन्दना।